HANS SHODH SUDHA, Vol. 2, Issue 1, (2021), pp. 12-19

कोरोना काल में भारत की विदेश नीति

डॉ० सुरेन्द्र प्रसाद सिंह

राजनीति विज्ञान विभाग, बहरागोड़ा महाविद्यालय, बहरागोड़ा, कोल्हान विष्वविद्यालय, चाईबासा

E-mail: sgsraj02@gmail.com

समकालीन भारतीय विदेश नीति के सिद्धान्तों में गतिशीलता और व्यवहारिकता की झलक मिलती है। जिसका लक्ष्य मानव कल्याण, विश्व कल्याण तथा पर्यावरणीय सुरक्षा रहा हैं, साथ ही भारत हमेशा आतंकवाद विरोधी रवैया अपना कर चल रहा है। कोरोना काल में भारत की विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य पड़ोसी देशों के कटुतापूर्ण व्यवहार, विस्तारवादी देशों के प्रति सरव्त कदम, आतंकवाद के विरूद्ध कार्यवाही, गुजराल डॉक्ट्रिन के तहत पड़ोसी देशों के साथ संबंध सुधारना तथा वैश्विक समाज में शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरना और वैक्सीन डिप्लोमेसी के अन्तर्गत लगभग 155 देशों को कोरोना वैक्सीन मुहैया कराना इसकी प्राथमिकता है।

कोरोना काल में भारत की विदेश नीति का मुख्य लक्ष्य राष्ट्रीय हित के साथ – साथ विश्व हित है, जिसकी जड़ों को सम्राट अशोक के शांति, अहिंसा के सिद्धान्त, लोक कल्याण या मानव कल्याण से जोड़ा जा सकता है। इसके उपरांत शांतिपूर्ण सह अस्तित्व और मानवीय मूल्यों की रक्षा व विश्व के मानव कल्याण को समर्पित है।

समकालीन विश्व उदारीकरण तथा विश्वीकरण की आकांक्षा रखती है, जिसमें भारतीय विदेश नीति अपने आप में अनोखा बन जाती है। भारत में आर्थिक विकास की तीव्रता प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, विदेशी व्यापार का विस्तार, ब्रिक्स संगठनों की भूमिका, आसियान, सार्क, बिम्बस्टेक और क्वाड आदि के द्वारा हुई है। इस मुक्त बाजार व्यवस्था और स्वतंत्र व्यापार के कारण वैश्वीकारण को काफी बढ़ावा मिला है। वर्तमान में **आत्मनिर्भर भारत** के अन्तर्गत बहुत सारी योजनाएँ चल रही हैं। यह आर्थिक विकास कोरोना काल में विदेश नीति का प्रमुख केंन्द्र बन गई है। वैसे जब भारत में कोरोना वैक्सीन बना तो प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वैश्विक समाज में मानव कल्याण हेतु सभी देशों की वैक्सीन देने की बात कही।

किसी भी देश की विदेश नीति निर्धारक के रूप में भू– राजनीति तथा भू–आर्थिक कारक महत्वपूर्ण होता हैं। वैसे ही भू–राजनीति और भू–आर्थिक कारक भारत की विदेश नीति निर्धारण में न केवल महत्वपूर्ण

योगदान रहा है, बल्कि इस क्षेत्र में उसकी सुदृढ़ अवस्थिति को भी व्यक्त करता है। हाल ही में इसका सजीव उदाहरण दक्षिण चीन सागर में बढ़ता व्यापार और हिन्द महासागर में विभिन्न देशों की सामरिक अवस्थिति है। भारत की भू–राजनीतिक वर्तमान में भारत की विदेश नीति की विशेषता बन गयी है। भू–राजनीतिक तत्वों के अन्तर्गत इसकी भौगोलिक अवस्थिति, हिमालय, हिन्द महासागर आदि राष्ट्रीय शक्ति के प्रमुख स्रोत हो जाता हैं, टीक इसी प्रकार भू–आर्थिक कारक जैसेः सार्क, आसियान, यूरोपीम संघ, पूर्व की ओर देखों नीति, विश्व व्यापार संगठन आदि भारत की विदेश नीति के निर्धारण में अहम भूमिका है।

जब जनवरी 2020 में चीन के वुहान शहर के फूड मार्केट से कोरोना वायरस पूरी दुनियाँ में तेजी से फैला तो विश्व के लगभग देशों की आर्थिक व्यवस्था चरमरा गयी, क्योकि सभी देश मानव की सुरक्षा हेतु स्वास्थ्य सेवाओं पर ज्यादा से ज्यादा खर्च करने लगा है। इसमें भारत भी शामिल है, जिसकी वजह से भारत सरकार की नीति आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ा है।

भारत की विदेश नीति का समयान्तर्गत महत्वपूर्ण विशेषताएं परिलक्षित होता है। भारत अपनी राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों, अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों, सूचना व संचार संसाधनों, पर्यावरणीय सुरक्षा, मानवाधिकारों की रक्षा तथा आतंकवाद विरोधी कार्यवाही के पक्षधर है, जिसकी अनोखी झलक और परख भारत की विदेश नीति में मिलती हैं।

वैश्विक समाज में भारत की विदेश नीति की प्रमुख बातें गुट निरपेक्षता की नीति, उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद का विरोध, रंगभेद या नस्लीय भेदभाव का विरोध, पंचशील सिद्धान्त, राष्ट्रमंडल में गहरी आस्था, क्षेत्रीय सहयोग संगठन में दिलचस्पी, निःशस्त्रीकरण का मानवीय हितों में समर्थन, स्पष्ट परमाणु नीति तथा विश्व की विशालतम संस्था संयुक्त राष्ट्रसंघ में आस्था व विश्वास आदि हैं। इन बातों के आधार पर भारत की विदेश नीति की निरंतरता को बनाये रखना अति महत्वपूर्ण है। भारत समय–समय पर अपने पड़ोसी देशो के साथ संबंध बनाकर लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप कार्य किया है। परन्तु समाजवादी चीन व तखतापलट पाकिस्तान कभी–कभी सैनिक शासन के इशारे पर सरकार चलाती है, जिससे भारत को अशान्ति के दौड़ से गुजरना पड़ता है। फिर भी भारत सुदृढ़ इच्छाशक्ति के कारण भविष्य में वैश्विक शक्ति बनने में काफी कामयाब हुआ है। इसकी झलक कोरोना काल में परिलक्षित हुआ है

कोरोना काल में मानवीय जीवन में मनोवैज्ञानिक तनाव बढ़ा है। भारत सार्वभैमिक स्वास्थ्य के लिए विश्व समुदाय से आह्वान किया है कि तनाव प्रबंधन के लिए योग करना अनिवार्य है। भारत की कोरोना से लड़ने की क्षमता कई गुना बढ़ने का कारण यहाँ की परम्परागत योग विद्या का प्रसार हुआ है। विश्व समुदाय योग आधारित जीवन शैली अपनाकर स्वास्थ्य लाभ ले सकता है और कोरोना को

जड़ से समाप्त भी कर सकता है।

भारत महामारी के संकट के समय टेस्टिंग किट, वेंटीलेटर और पीपीई के लिए काफी चिंतित था, इसको चीन से आयात किया गया जो घटिया किस्म का था। अमेरिका से स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करने हेतु आवश्यक सामग्री आयात किये गये, लेकिन भारत स्वदेशीपन पर बल देकर दुनियाँ के समक्ष मुसीबत की घड़ी में मुस्तैद बनकर खड़ा रहा और कोरोना वायरस से लड़ता रहा, जिसकी सराहना विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी किया है। भारत चेचक, टेटनस, पोलियों और गिनिया कृमि रोग के उन्मूलन में सफल रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत को सचेत भी किया है और कोरोना वायरस से लड़ने में इसकी महत्वपूर्ण कदम की प्रशंसा भी किया है, जो दुनिया के देशों के लिए एक नया संदेश है।

वर्तमान विश्व में स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित विश्व के देशों का व्यापार जुड़ा है। वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली की सावधानी से जॉच पड़ताल करना वक्त की जरूरत है। भारत विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ मिलकर सदस्य देशों का ध्यान स्वास्थ्य सेवाओं की ओर खीचा, जिससे विश्व व्यापार को बढावा देने की ओर भारत की तरफ कदम बढ़ा सके और भारत भी मानव श्रम का उपयोग अधिक से अधिक करने में सक्षम हो सकें और सफलता की राह पर आगे बढ़ सकें।

कोरोना काल में भारत अपनी विदेश नीति में नए आयाम शामिल करके गुटनिरपेक्षता की उद्घोषणा के वगैर अपने मित्रों और सहयोगियों से प्रगाढ़ संबंध बनाने पर तत्पर है। भारतीय प्रधानमंत्री का अमेरिका दौड़ा व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का भारत आना, इसका उदाहारण है। भारत का लक्ष्य है– निर्यात भागीदार के बीच तनाव कम करना और पूँजी निवेश को बढ़ाना। भारत ने हिंद, प्रशांत तथा मध्य–पूर्व देशों के साथ–साथ दक्षिण एशिया और हिन्द महासागर क्षेत्र में नये संबंधों को नयी दिशा दिया है। भारत की बढ़ती वैश्विक हैसियत से वर्तमान विश्व व्यवस्था में मजबूत भागीदारी हो रहीं है।

इस समय विदेश नीति में कूटनीति नये रूपों में दृष्टिगत हुई। भारत ने यूएई, साउदी अरब, कतर, ईरान, अफ्रीका आदि देशों में डाक्टरों, चिकित्सा टीमों, दवाओं, पीपीई तथा अन्य जीवन रक्षक उपकरणों को भेजकर मानव कल्याण का कार्य किया है। इसके साथ ही विश्व के विभिन्न देशों चीन, अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, जर्मनी, आस्ट्रेलिया आदि में भारतीय समुदाय के साथ सम्पर्क कर भारत ने कोरोना काल में विदेश नीति का महत्वपूर्ण परिचय दिया है।

कोरोना काल में भारत संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद की उच्च स्तरीय आभासी बैठक में प्रधानमंत्री नें पोस्ट कोविड–19 पीरियड' में बहुपक्षीय संस्थाओं में सुधार की आवश्यकताओं पर बल दिया तथा वैश्विक व्यवस्था में परिवर्तन के साथ उत्पन्न समस्याओं के समाधान में अनिवार्य बदलाव लाया है। इसलिए कोविड–19 के समय भारत की वैश्विक कार्य प्रणाली व भूमिका से ही वर्ष

2021–2022 के लिए सुरक्षा परिषद का गैर–स्थायी सदस्य चुना गया है, जो भारत के लिए महत्वपूर्ण सफलता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वैदेशिक संबंधों को मजबूती प्रदान करने हेतु छोटे–छोटे पड़ोसी देशों को भरोसा दिलाया कि भारत पड़ोसी देशों के साथ समानता के आधार पर मैत्री धर्म निभाएगा। श्री मोदी जी ने शपथ ग्रहण समारोह में इसी कारण दक्षेस देशों के नेताओं को आमंत्रित किया था। उन्होने भूटान, नेपाल, श्रीलंका, बंग्लादेश और चीन की यात्रा करके पड़ोसी देशों से मधुर संबंधों की शुरूआत की। जब नेपाल में भूकंप आया था, तो तुरन्त बचाव और राहत कार्य सुनिश्चित करके दुनिया का ध्यान अपनी ओर खीचा। प्रधानमंत्री ने कूटनीतिक संबंधों की शुरूआत जापान से की और ''**कम मेक इन इण्डिया**'' को प्रारंभ किया। प्रधानमंत्री अमेरिका की यात्रा करके नये संबंधों की शुरूआत की, वही पाकिस्तान सैनिक और आतंकवादी गटबंधन करके भारत के शरीर को लहुलुहान करता रहा। इधर चीन लगातार भारतीय सीमा पर उत्पात मचाता रहा, जिसका प्रस्फूटन कोरोना काल में गलवान घाटी में सैनिकों के झड़प में दृष्टिगत हुआ। हमारे 20 वीर सपूत ने शहादत देकर चीन को भारी क्षति पहुँचाया। विगत वषों में चीन पाकिस्तान के साथ मिलकर भारत के खिलाफ षडयंत्र रचता रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वैश्विक समाज के समक्ष यथार्थवादी तरीके से भारत की विदेश नीति को रखा तथा राष्ट्रहित के साथ देश को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। 26 जनवरी 2015 को गणतंत्र दिवस के सुअवसर पर अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित कर भारत ने नयी संबंधों की शुरूआत की तथा रूस की यात्रा करके प्रधानमंत्री ने नई दिशा देने का प्रयास किया। भारतीय प्रधानमंत्री ने दोनों देशों के बीच संतुलित ढंग से भारत की मंशा को रखा। इसके साथ ही खाड़ी और अफ्रिकी देशों की यात्रा भी सफलता के साथ किया। वर्तमान में मोदी सरकार सबका साथ, सबका विकास मंत्र के साथ ही वैश्विक स्तर पर लुक ईस्ट पॉलिसी की बजाय एक्ट एशिया नीति को प्रमुखता दी हैं।

कोरोना काल में नई विश्व व्यवस्था उभर कर सामने आया हैं। प्रधानमंत्री मोदी जी ने विश्व के प्रमुख शक्तियों के साथ संबंधों की शुरूआत किये है। विश्व के देशों की गरीबी, प्रवासन, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और परम्परागत अस्त्रों की समस्याओं को पीछे छोड़कर नयी आपातकालीन स्वास्थ्य जैसी समस्याएँ सामने आयी और भारत नई भूमिका में प्रकट हुआ है। भारत की विदेश नीति के मूल सिद्धान्त 'वासुघैव कुटुंबकम' (सारी दुनिया एक परिवार) है। प्रधानमंत्री ने कहा, ''पूरी दुनिया में भारत की प्रतिभा बल, विशेष रूप से भारतीय प्रौद्यौगिकी, उद्योग और तकनीकी पेशेवरों के योगदान को अत्यधिक मान्यता दी जाती है। ''[1] प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने'' भारत को प्रतिभा का पॉवर हाउस बताया, जो योगदान देने के लिए उत्सुक है।''[2]

इस महाभारी के समय भारत ने 155 देशों से अधिक देशों में चिकित्सा साजोंसमान

भेजा तथा विभिन्न देशों में रैपिड रिस्पांस टीम (टी आर टी) की तैनाती की और लगभग 100 से अधिक देशों में वर्चुअल डिप्लोमेटिक मीटिंग्स की बैठके आयोजित की है। भारत ब्रिक्स, शंघाई सहयोग संगठन और आई आर सी की मंत्री स्तरीय बैठकों में भाग लिया। इस कोरोना काल में भी हम अपने विदेश नीति को स्फूर्ति के साथ जारी रखा है।

कोरोना काल में भारत की विदेश नीति प्रतिबद्ध और बहुपक्षवादी है। प्रधानमंत्री ने G-20 को अपने संबोधन में कहा था, ''वैश्वीकरण को मानव जाति के सामूहिक हितों को आगे बढ़ाना चाहिए। यह मानव केन्द्रित प्रक्रिया होनी चाहिए।'' जी20 के 19 सदस्य देशों में अर्जेटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, जर्मनी, फ्रांस, इंडोनेशिया, इटली, जापान, मेक्सिको, रूसी संघ, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया, तुर्की, यूके, अमेरिका और भारत शामिल हैं। इस बैठक के दौरान स्वास्थ्य मंत्री डॉ हर्षवर्धन ने कहा, '' मैं कोविड–19 के खिलाफ हमारी लड़ाई में अपने देशों में हालात को संभालने और उसका प्रबंधन करने के लिए आप सभी को बधाई देता हूँ।''[3] उन्होंने कहा,'' दुनिया के सामने मौजूद वैश्विक स्वास्थ्य संकट ने एक ऐसा अवसर प्रदान किया है जिसमें हमें गहराई से सोचने की जरूरत है कि हम कैसे एक दूसरे से जुड़ सकते है। साथ ही हमें सामूहिक ताकत और बुद्धिमत्ता के साथ काम पूरा करने का मौका भी मिला है।''[4]

प्रधानमंत्री ने सार्क देशों के वर्चुअल शिखर सम्मेलन में कहा, '' सबका साथ सबका बचाव। हमारे संबंध पुराने और आपस में जुड़े हुए है। इसलिए हमें साथ रहना होगा और मिलकर काम करना होगा।'' इस प्रकार वैश्विक आवधारणा को आकार देने और कोरोना काल में महामारी से बचाव हेतु प्रयास जारी रहा है। पुनः प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन वर्चुअल शिखर सम्मेलन, ग्लोवल वैक्सीन शिखर सम्मेलन तथा संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक परिषद के उच्च स्तरीय बैठक में भाग लेकर मानव कल्याण हेतु भारत की भूमिका के निर्वाह का आह्वान किया है।

भारत वैश्विक समुदाय का एक जिम्मेदार सदस्य है। वर्तमान वैश्विक महासंकट में विभिन्न देशों की स्थिति काफी दयनीय है और महामारी की मार से जनता त्रस्त है। कोरोना काल में वैश्विक महामारी से बचने हेतु उपचार के लिए कोई समान नीति नहीं है। परन्तु मास्क पहनना, हैन्ड सौनिटाइजर का प्रयोग, सामाजिक दूरी आदि से वैश्विक समाज को बचाया जा सकता है। प्रधानमंत्री ने कहा है, ''**दो गज दूरी बहुत जरूरी**,''[5] जिसका पालन विश्व के देशों ने स्वभावतः ही किया है। इसी बीच अमेरिका, ब्राजील, नेपाल, ब्रिटेन आदि देशों को भारत में उत्पादित हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन और पेरासिटामोल जैसी दवाओं को मानव जाति की रक्षा हेतु भारत ने भेजकर विश्व विरादरी की रक्षा की।

इस कोरोना काल में भारत ने आतंकवाद की व्यूहरचना को खत्म करने की माँग विश्व समुदाय से की हैं, पाकिस्तान ने

कोरोना काल में लगभग 1400 बार सीजफायर का उलंधन किया है। भारत ने मुँहतोड़ जवाब देकर आतंकवाद की कमर तोड़ दी और अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर एक व्यापक सम्मेलन को भी अंतिम रूप दी है। भारत शांतिपूर्ण सहअस्तित्व वाला देश है। चीन और पाकिस्तान को इसका पाठ कोरोना काल में भी पढ़ाने के लिए भारत ने मजबूर कर दिया है।

भारत की विदेश नीति अंतरिक्ष, साइबरवर्ल्ड तथा जैविक क्षेत्रों में भी चुनौतियों से भरा हुआ है, जिसका भारत मुकाबला कर रहा है। भारत ने अपनी कौशल विकास से पूरी दुनियाँ को सुरक्षित रखने में तत्परता दिखाई है। आत्मनिर्भर भारत भी इसी कड़ी का हिस्सा है, जिससे भारत संकट के दौड़ से उभरने का मंत्र अख्तियार किया है, जिसका उद्देश्य वैश्विक प्रतिस्पर्घा का मुकाबला और सक्षम अर्थव्यवस्था का निमार्ण करना है, जो अर्थव्यवस्था भारतीय व्यापारियों और उद्योगपतियों का देश में निवेश करने में विश्वास बढ़ाएगी तथा विदेशी निवेशकों को भी आकर्षित कर पाएगी।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने भारत की विदेश नीति में एक नया आयाम जोड़ा है। उन्होने विदेश नीति में आदर्शपरक तथा यथार्थपरक नीति का सामंजस्य करके व्यवहारिक तरीके से देश के विकास के लिए प्रयास किया है। कोरोना काल के कुछ महीने पूर्व अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, कनाडा, मलेशिया, चीन, पाकिस्तान, रूस आदि देशों का दौड़ा करके वहाँ के नेताओं से व्यक्तिगत रिश्ते की बुनियाद को रखा व ताजा किया है। लेकिन कुछ देश जैसे चीन व पाकिस्तान इस महामारी में भी अपने पूर्ण सर्वसत्तावादी शासन प्रणाली के अंध में पड़े रहे और विस्तारवादी रवैंया अपनाता रहा है। भारत ने चीन के इस कटूते को पूर्व की भाँति समझता रहा और सहनशीलता का परिचय देता रहा है। चीन ने गलवान घाटी, पैगौंग झील, पूर्वी लद्वाख में अपनी सैनिक जमावड़ा बढ़ाकर घुसपैट करने की सीनाजोड़ी किया, लेकिन भारत काफी सजग व सतर्क सैनिकों की बदौलत उसे पीछे हटने पर मजबूर कर दिया है।

इसी प्रकार जब अमेरिका व चीन के बीच संबंधों में कडुवाहट महामारी की वजह से हुई तो दक्षिण चीन सागर में शक्ति प्रयोग की राजनीति शुरू हो गयी। दक्षिण चीन सागर में चीन की घेराबंदी से चीन बौखला उठा है। चीन ने महामारी फैलाकर दुनिया को गुमराह करके आर्थिक महाशक्ति की ओर तेजी से कदम बढ़ाया है और वैश्विक स्तर पर अपनी प्रतिष्ठा धूमिल किया है। साथ ही एशिया में भारत के विकास को रोकने की कोशिश भी की है। परन्तु भारत ने कोरोना काल में अमेरिका को साथ देकर नयी रिश्तों की शुरूआत कर डाली है। वर्तमान समय में भारत की विदेश नीति निरंतरता के साथ–साथ परिवर्त्तनशीलता की गाँठ बाँध कर चल रहा है, जो वास्तव में कोरोना जैसे महामारी के समय भारत के लिए बड़ी उपलब्धि है।

निष्कर्षः–

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद चीन के वुहान शहर से फैला कोरोना वायरस के कारण वैश्विक समाज में

दहशत का माहौल है। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय चुनौतीपूर्ण माहौल में जीने को विवश है। भारत की विदेश नीति कोरोना काल में चुनौनियों को स्वीकार कर इसके समाधान में सक्षम और उत्तरदायी पूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। कोरोना काल में भारत की विदेश नीति वसुधैव कुटूम्बकम की भावना और संवेदना के साथ मानव कल्याण के साथ–साथ विश्व कल्याण पर आधारित है। भारत ने इस काल में भू–राजनीतिक, भू–आर्थिक, आतंकवाद, दवाई भेंजकर, महामारी पर नियंत्रण व टीकाकरण करके, वैक्सीन डिप्लोमेसी, विभिन्न वर्चुअल सम्मेलन करके तथा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं से जुड़कर विश्व कल्याण जैसी महती कार्य किया है। वर्तमान में भारत की विदेश नीति राष्ट्रीय हित के साथ–साथ विश्व हित के कार्यो को सम्पादित करने में सक्षम है। कोरोना काल में भारत की विदेश नीति का यह नैतिक आधार है। यह गाँधी जी के सपनों की नीति है, जैसा कि 1924 में गाँधी जी लिखा था, '' मेरी अभिलासा है कि मै भारत के प्रयासों के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के नैतिक आधार प्रदान कर सकूँ।''[6] पुनः उन्होने 1925 में यंग इंडिया में लिखा है,'' राष्ट्रवादी हुए बिना किसी का अन्तर्राष्ट्रीयवादी होना असंभव है। ''[7]भारत की विदेश नीति कोरोना काल में ही नहीं बल्कि अन्य परिस्थितियों में भी भविष्य में विश्व की आगुवाही करने में सक्षम रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. कुरूक्षेत्र, अगस्त 2020, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली पृ०– 05
2. कुरूक्षेत्र, अगस्त 2020, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली पृ०– 05
3. योजना, जी 20 के स्वास्थ्य मंत्रियों की बैठक, मई 2020
   प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृ०– 47
4. योजना, जी 20 के स्वास्थ्य मंत्रियों की बैठक, मई 2020
   प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृ०– 47
5. योजना, भारत में कोरोना के खिलाफ लड़ाई में देश का हर नागरिक सिपाही – प्रधानमंत्री,
   मई 2020, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, पृ०– 41
6. संपादकीय, ''नई विश्व व्यवस्था'', योजना, अक्टूबर, 2020
   प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली पृ०– 05
7. वही पृ०– 05
8. कपूर, हरीश; चाइना इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स,
   इन्डिया इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली, 1975
9. चिनॉय, अनुराधा; इंडिया एण्ड एशिया, अलायंस इन द इंटरनेशनल पॉलिटिकल सिस्टम,
   इण्डिया– एशिया स्ट्रैटजिक पार्टनरशिपः

द कोमन पर्सपैक्टिव संपादित पी. स्टोदान 2010.
प्रकाशकः इंस्टीटयूट ऑफ डिफेस स्टडी एण्ड एनालिसिस।

10. दिक्षित, जे.एन.; इन्डिया फौरेन पॉलिसी एण्ड इट्स नाइभर,
ज्ञान पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2001

11. ग्रिन एण्ड व्यूहरमन, लूरा, कम्पेरेटिव पॉलिटिक्स ऑफ द थर्ड वर्ल्डः लिकिंग कन्सेप्ट एण्ड केसेस
विवा बुक प्राईवेट लिमिटेट, नई दिल्ली – 2004

12. खिलानी, निरंजन. एम.; न्यू डाइमेन्सन ऑफ इन्डियन फौरेन पॉलिसी,
वेस्टविल्ला पब्लिसिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1995

13. शर्मा, राजीव,'' ह्वाई मोदी पिक्ड भूटान फॉर हिज फर्स्ट फौरेन बिजिट एज मोदी ''
फर्स्ट पोस्ट 7 जून 2014

14. भेदी शेट्टी, कमल,''मोदीज नाईभरहूड फर्स्ट पौलिसी मस्ट मार्च ऑन, विद और विदाउट पाकिस्तान''
16 मार्च, 2017, सी एल ए डब्ल्यू एस,

15. कोरा, विनय; ग्रेंडिग इण्डिया नाईभरहूड डिण्लोमेसी''
1 जनवरी, 2018, द डिण्लोमेट।

16. दैनिक जागरण, नई दिल्ली, 13 दिसम्बर 2015

17. नव भारत टाइम्स, नई दिल्ली, 24 दिसम्बर 2015

18. हिन्दुस्तान, नई दिल्ली, 5 जनवरी 2020

19. जनसत्ता, नई दिल्ली, 10 मार्च, 2020